९. ब्रजवासी

– *भक्त सूरदास*

जसोदा बार–बार यौं भाषै ।
हे कोऊ ब्रज हितू हमारौ चलत गुपालहिं राखै ।।
कहा काज मेरे छगन–मगन कौं, नृप मधुपुरी बुलायौ ।
सुफलक सुत मेरे प्रान हरन कौं काल रूप है आयौ ।
बरु यह गोधन हरौ कंस सब मोहिं बंदि लै मेलौ ।
इतनोई सुख कमल–नयन मेरी अँखियान आगे खेलौ ।।
बासर बदन बिलोकत जीवों, निसि निज अंकम लाऊँ ।
तिहिं बिछुरत जो जियौं कर्मबस तौ हँसि काहि बुलाऊँ ।।
कमलनयन गुन टेरत टेरत, दुखित नंद जु की रानी ।।

× × × ×

प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ ।
प्रीति पतंग करी पावक सौं, आपै प्रान दह्यौ ।।
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सौं, संपुट मांझ गह्यौ ।
सारंग प्रीति करी जु नाद सौं, सन्मुख बान सह्यौ ।।
हम जो प्रीति करी माधव सों, चलत न कछू कह्यौ ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख पावत, नैननि नीर बह्यौ ।।

× × × ×

अति मलीन वृषभानु कुमारी ।
हरि श्रम जल भीज्यौ उर अंचल, तिहि लालच न धुवावति सारी ।।
अध मुख रहति, अनत नहिं चितवति, ज्यौ गथ हारे थकित जुवारी ।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी ।।

× × × ×

कहाँ लौं कहिए व्रज की वात ।
सुनह स्याम तुम विन उन लोगनि जैसे दिवस विहात ।।
गोपी, ग्वाल, गाइ गोसुत सब, मलिन वदन कृस गात ।
परम दीन जनु सिसिर हेम हत, अंबुजगन विनु पात ।।
जो कोउ आवत देखि दूरि तें उहि पूछत कुसलात ।
चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरननि लपटात ।।
पिक चातक वन वसत न पावत वायस वलि नहिं खात ।
सूर स्याम संदेसन के डर पथिक न उहिं मग जात ।।

× × × ×

परिचय

जन्म : १४७८, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : १५८०

परिचय : भक्त सूरदास वात्सल्य रस के मर्मज्ञ कवि माने जाते हैं । आपने शृंगार और शांत रसों का भी बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन किया है । आप हिंदी भाषा के सूर्य कहे जाते हैं । आपका काव्य सृजन ब्रज भाषा में हुआ है । आपके पदों में गेयता है । आपके 'भ्रमरगीत' में सगुण और निर्गुण का उत्तम विवेचन हुआ है । उसमें वियोग एवं प्रकृति सौंदर्य का सूक्ष्म और सजीव वर्णन किया गया है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'सूरसागर', 'सूर सारावली', 'साहित्य लहरी', 'नल दमयंती' आदि ।

पद्य संबंधी

भक्त सूरदास ने इन पदों में उस समय का वर्णन किया है जब श्रीकृष्ण गोकुल से मथुरा चले गए हैं । गोकुलवासी कृष्ण वियोग से व्यथित हैं । प्रथम तीन पदों में आपने माता यशोदा एवं गोपियों के श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम एवं उनकी अनुपस्थिति में उनके दुख को दर्शाया है ।

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं ।
वृंदावन गोकुल वन उपवन, सघन कुंज की छाहीं ।।
प्रात समय माता जसुमति अरु नंद देखि सुख पावत ।
माखन-रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत ।।
गोपी, ग्वाल, वाल संग खेलत, सब दिन हँसत सिरात ।
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौं हितु जदु-तात ।।

('सूरसागर' से)

— ० —

चौथे पद में उद्धव गोकुल से लौटकर मथुरा में श्रीकृष्ण को गोकुल निवासियों, पशु-पक्षी, प्रकृति का उनके प्रति प्रेम, विरह, कष्ट सुनाते हैं । अंतिम पद में श्रीकृष्ण के ब्रजभूमि एवं वहाँ के निवासियों के लगाव का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है ।

शब्द संसार

हितू पुं.सं.(हिं.) = हितैषी, स्नेही
मधुपुरी स्त्री.सं.(सं.) = मथुरा
बरु अ.(हिं.ब्रज.) = बल्कि
बासर पुं.सं.(हिं.ब्रज.) = दिन
पावक पुं.सं.(सं.) = अग्नि
संपुट पुं. सं.(सं.) = कमल की पंखुडियों का घेरा
अनल पुं.सं.(सं.) = अग्नि
चिकुर पुं. सं.(हिं.ब्रज.) = केश
बिहात क्रि.(हिं.ब्रज.) = बीतना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

यशोदा की कृष्ण वियोग में कही हुई बातें

(२) कृति कीजिए :

असफल प्रीति के लिए पद्‌य में प्रयुक्त उदाहरण

(३) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

कृष्ण विरह में राधा की स्थिति

(४) संजाल पूर्ण कीजिए :

कृष्ण इन्हें नहीं भूल पाते

(५) दूसरे पद का सरल अर्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'मैं प्रकृति बोल रही हूँ' विषय पर निबंध लेखन कीजिए ।

782HMH